प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

विश्वविद्यालय में 'जलवायु अनुकूल कृषि' पर तीन–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

पन्तनगर। 04 अक्टूबर 2023। विश्वविद्यालय के शोध निदेशालय व उत्तराखण्ड सरकार के ग्राम्य विकास विभाग द्वारा संयुक्त रूप से रीप–आइफेड परियोजना के अन्तर्गत 'जलवायु अनुकूल कृषि' विषय पर यूनिवर्सिटी सेंटर (नाहेप भवन) में तीन–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में रीप–आइफेड परियोजना के अन्तर्गत उत्तराखण्ड राज्य के सभी जिलों के सहायक प्रबन्धक व सहायक कृषि अधिकारियों समेत कुल 75 मास्टर ट्रेनर्स प्रतिभाग कर रहे हैं। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने उत्तराखण्ड में हो रहे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर विस्तृत चर्चा की और उसी के अनुरूप जलवायु अनुकूल कृषि के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने पहाड़ों के विशेष भौगोलिक क्षेत्रों का उदाहरण देते हुए कहा कि वैज्ञानिकों को पहाडों पर उन क्षेत्रों का संज्ञान लेना चाहिए जहां सूर्य की रोशनी बहुत कम पहुँचती है, परन्तु फिर भी कुछ वनस्पतियां ऐसी हैं जो बहुत ही अच्छे तरीके से विकसित व फलित रहती हैं। ऐसी वनस्पतियां जलवायु अनुकूल कृषि का महत्वपूर्ण अंग बन सकती हैं। उन्होंने पन्तनगर विश्वविद्यालय द्वारा पहाड़ी क्षेत्रों के लिए विकसित विभिन्न फसलों की प्रजातियों व पशुधन तथा कुक्कुट नस्लों के प्रयोग पर भी बल दिया। उन्होंने मास्टर ट्रेनर्स से अपील की कि वे इस तीन–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में जो भी सीख कर जायें, विश्वविद्यालय की तकनीकियों को दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों तक उन परिवारों के मध्य जरूर ले जायें जिनके पास जमीन बहुत कम है, ताकि ऐसे परिवारों को स्वावलंबी बनाया जा सके, उन्हें रोजगार के साधन स्थानीय स्तर पर मिल सके और पहाड़ से पलायन को रोका जा सके।

कार्यक्रम के आयोजक निदेशक शोध डा. ए.एस. नैन ने बताया कि विश्वविद्यालय व उत्तराखण्ड के ग्राम्य विकास विभाग की परियोजना निदेशक डा. निकिता खण्डेलवाल (आई.ए.एस.) ने जलवायु अनुकूल कृषि के परिप्रेक्ष में उसके महत्व को देखते हुए उनके मध्य एक सहमति प्रदान की गयी। इस सहमति के अनुसार विश्वविद्यालय अपने वैज्ञानिकों व तकनीकियों की जानकारी रीप–आईफेड के मास्टर ट्रेनर्स को प्रशिक्षण के माध्यम से उपलब्ध करायेंगे। उसके बाद ये प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर्स इन तकनीकियों को उत्तराखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों तक ले जायेंगे। डा. नैन ने बताया कि इस तीन–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उत्तराखण्ड के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के अनुरूप जलवायु अनुरूप कृषि के अन्तगर्त आने वाले सभी पहलुओं जैसे फसल प्रबन्धन, फसल प्रजातियां, बागवानी प्रबन्धन, औषधीय पौधों, पहाड़ी क्षेत्रों में जल प्रबन्धन, पशुपालन इत्यादि पर विस्तृत चर्चा की जाएगी। रीप–आइफेड के प्रतिनिधि विपन मण्डवाल ने परियोजना के उद्देश्यों व क्रिया–कलापों पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र के दौरान प्रशिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के व्याख्यानों की डा. ए.एस. नैन एवं डा. अनिल कुमार द्वारा संपादित पुस्तक 'क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर' का मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन भी किया गया। यह पुस्तक डा. एम.एस. स्वामीनाथन के कृषि क्षेत्र में दिये गए बहुमूल्य एवं उत्कृष्ट योगदान को समर्पित की गई है। कार्यक्रम के अन्त में भारतीय कृषि में हरित क्रान्ति के जनक डा. एम.एस. स्वामीनाथन को श्रद्धांजलि दी गयी। कार्यक्रम का संचालन संयुक्त निदेशक शोध डा. अनिल कुमार व डा. पी.के. सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. के.पी. रावेरकर, निदेशक संचार एवं प्रसार शिक्षा डा. जे.पी. जायसवाल, अधिष्ठाता कृषि डा. एस.के. कश्यप, अधिष्ठात्री गृह विज्ञान डा. अल्का गोयल, डा. संजय वर्मा एवं डा. वी.पी. सिंह सहित वैज्ञानिक एवं अधिकारी उपस्थित थे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में पुस्तक का विमोचन करते कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान एवं अन्य।

निदेशक संचार